

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये एकाशीतितमं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে একাশীতিতমং দশকম্ ॥

সুভদ্রাহরণং, কালিন্দ্যাদিরিরাহরণং, নরকাসুরধরণং চ  
স্নিগ্ধাং মুগ্ধাং সততমপি তাং লালযন্ সত্যভামাং  
যাতো ভূযঃ সহ খলু তযা যাজ্জসেনীরিরাহম্।  
পার্থপ্রীতৈ পুনরপি মনাগাস্থিতো হস্তিপূর্যাং  
শক্রপ্রস্থং পুরমপি রিভো সংরিধাযাগতোহভুঃ ॥ 81.1 ॥

ভদ্রাং ভদ্রাং ভরদররজাং কৌরৱেণার্থ্যমানাং  
ৱেদ্রাচা তামহত কুহনামস্করী শক্রসুনুঃ।  
তত্র ক্রুদ্ধং বলমনুনযন্ প্রত্যগাস্তেন সার্থং  
শক্রপ্রস্থং প্রিযসখমুদে সত্যভামাসহাযঃ ॥ 81.2 ॥

তত্র ক্রীডন্নপি চ যমুনাকুলদৃষ্টাং গৃহীৎরা  
তাং কালিন্দীং নগরমগমঃ খাণ্ডরপ্রীণিতাশ্নিঃ।  
ভ্রাতৃস্তাং প্রণযরিরশাং দেৱ পৈতৃৱসেযীং  
রাজ্ঞাং মধ্যে সপদি জহ্ষে মিত্রিন্দামরন্তীম্ ॥ 81.3 ॥

সত্যাং গৎরা পুনরুদরহো নগ্নজিনন্দনাং তাং  
বধ্ৱা সপ্তাপি চ বৃষররান্ সপ্তমূর্তিনিমেষাৎ।  
ভদ্রাং নাম প্রদদুরথ তে দেৱ সন্তর্দনাদ্যা -  
স্তৎসোদর্যা ৱরদ ভরতঃ সাহপি পৈতৃৱসেযী ॥ 81.4 ॥

পার্থাদৈৱপ্যকৃতলরনং তোযমাত্রাভিলক্ষ্যং  
লক্ষং ছিৎরা শফরমবৃথা লক্ষ্মণাং মদ্রকন্যাম্।

अष्टारेणं तत्र समभरन् रत्नभासुत्र मध्ये  
शुश्रोथ ँरं सुरपतिगिरा भौमदुश्चेष्टितानि ॥ 81.5 ॥

स्मृतायातं पम्फिप्ररमधिरुचस्तुमगमो  
रहन्नक्के भामामुपरनमिरारातिभरनम्।  
रिभिन्दन् दुर्गाणि क्वाटितपृतनाशोणितरसैः  
पुरं तारं प्राग्जेज्यातिषमकुरुथाः शोणितपुरम् ॥ 81.6 ॥

मुरस्तुं पङ्कास्यो जलधिरनमध्यादुदपतं  
स चक्रे चक्रेण प्रदलितशिरा मञ्जु भरता।  
चतुर्दन्तैर्दन्तारलपतिभिरिक्कानसमरं  
रथाप्सेन छिंरा नरकमकरोस्तीर्णनरकम् ॥ 81.7 ॥

स्तुतो भूम्या राज्यं सपदि भगदन्तेहस्य तनये  
गजैकं दंरा प्रजिघथिथ नागान्निजपुरीम्।  
खलेनावद्धानां स्वगतमनसां षोडश पुनः  
सहस्राणि स्त्रीणामपि च धनराशिं च रिपुलम् ॥ 81.8 ॥

भौमापाहृतकुण्डलं तददितेर्दातुं प्रयातो दिरं  
शक्रादैर्महितः समं दधितया द्युस्त्रीषु दतुह्रिया।  
हंरा कल्लतरुं रुषाभिपतितं जिंरेन्द्रमभ्यागम -  
स्तु श्रीमददोष ईदृश इति र्याख्यातुमेराकृथाः ॥ 81.9 ॥

कल्लद्रं सत्यभामाभरनभुरिसृजन् द्युष्टिसाहस्रयोषाः  
स्वीकृत्य प्रत्यगारं रिहितवह्नरपुर्लालयन् केलिभेदैः।  
आश्चर्यान्नारदालोकितरिधिगतिस्तु तत्रापि गेहे  
भूयः सर्वासु कुरन् दश दश तनयान् पाहि रातालयेष ॥ 81.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकाशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥